विश्व की वर्तमान परिस्थिति के संदर्भ में हम रामनवमी कैसे मनाए?

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवरात्रि पूरे भारत में रामनवमी पर्व के रूप में मनाई जाती है। रामायण की कथा के अनुसार इसी दिन श्री राम का जन्म अयोध्या में राजा दशरथ और रानी कौशल्या के पुत्र के रूप में हुआ था। आम तौर पर हम श्री राम के जन्मदिन के इस त्यौहार को राममंदिर में पूजा,पाठ, दर्शन करके; उपवास करके; राम की कथा सुनकर या पढ़कर; राम की महिमा गाकर या दान करके सदियों से मनाते आये हैं। यह जो कुछ भी कर रहे है वो ठीक है, लेकिन क्या यह पर्याप्त है? आज दुनिया में जो स्थिति हम देख रहे हैं और अनुभव कर रहे हैं, उसके संदर्भ में अगर हम देखे तो हमें जरुर लगेगा की त्यौहार के मुलभुत आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक रहस्यो को हम भूल गए है। यदि हम इन रहस्यों को जान कर उस प्रमाण उत्सव को मनाते है तो ज्यादा सार्थक होगा।

हमारे देश में वर्ष के अधिकांश त्यौहार धार्मिक होते हैं। इन सभी त्योहारों को मनाने के पीछे कुछ आध्यात्मिक रहस्य छिपे हुए है। हमारे अधिकांश त्यौहारों को मनाने के पीछे हमारा मुख्य लक्ष है कि हमारी निरंतर आत्म-उन्नति होती रहे, हम ईश्वराभिमुख बने रहे, हमारा जीवन गुणों और शक्तिओं से संपन्न रहे, हमारे जीवन के मूल्यों की रक्षा हो और हम जीवन में सच्चे सुख और शांति का अनुभव करें। लेकिन समयांतर और जन्मान्तर हम इस लक्ष्य को भूलते गए और उत्सव का स्वरूप, आत्म दर्शन, परमात्मा चिंतन, जीवन मूल्यों के संरक्षण के बजाय कर्मकांड, पूजापाठ, देवदर्शन में बदल गया है।

रामनवमी त्यौहार के बारे में भी कुछ एसा ही है। सरकार इस दिन छुट्टी की घोषणा करती है और हम इसका इस्तेमाल मौज-मस्ती करने के लिए करते हैं। अगर हम इस त्यौहार के लुप्त आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक रहस्यों को समझ कर त्यौहार को ठीक से मनाएंगे तो दुनिया की कई समस्याएं हल हो जाएंगी और जो रामराज्य की कल्पना हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने की थी वो साकार कर पाएंगे।

रामायण में श्री राम के चरित्र की महिमा है, लेकिन विशेष महिमा रामराज्य की है। एक ऐसा आदर्श राज्य जो दू:ख, अशांति, रोग, शोक, दुर्व्यवहार, भ्रष्टाचार, पापाचार से मुक्त हो| जहां एक एक व्यक्ति चरित्रवान, मूल्यनिष्ठ, दिव्यता संपन्न, सुख समृद्धि से परिपूर्ण हो। प्रत्येक पुरुष राम के समान हो और प्रत्येक स्त्री सीता के समान हो। लेकिन अगर हम दुनिया की मौजूदा स्थिति को देखें तो हम जरुर महसूस करेंगे कि हम राराज्य की धारणा से विपरीत जीवन जी रहे हैं। भारत सहित दुनिया के अधिकांश देश में लोकतंत्र हैं, हम खुद को स्वतंत्र मानते हैं, लेकिन क्या हम वास्तव में स्वतंत्र हैं? यदि आज की वैश्विक समस्याओं की सूची तैयार की जाए तो बहुत लंबी सूची तैयार हो जाएगी। इसलिए इस विषय के विस्तार में जाए बिना हमें उन समस्याओं के समाधान के बारे में सोचना होगा।

यदि हम श्री राम जैसा श्रेष्ठ जीवन चाहते हैं या राम राज्य जैसा श्रेष्ठ राज्य चाहते हैं तो हमें रामनाम के स्मरण से अतिरिक्त श्री राम के चरित्र पर विचार करके अपने जीवन में राम के चरित्र को आत्मसात करना होगा। हम श्री राम को मर्यादा

पुरुषोत्तम के रूप में याद करते हैं। अर्थात् सभी मर्यादाओं और संयम से संपन्न वे थे, पुरुषों में उत्तम थे। वे सच्चाई, ईमानदारी, नम्रता और न्याय के मूर्त स्वरूप थे। श्री राम का हृदय दिव्यता, प्रेम, करुणा, दया, सहानुभूति से संपन्न था। श्री राम ने जीवन भर अपने सभी रिश्तों जैसे बेटा, भाई, पति, और राजा का किरदार आदर्श पूर्वक निभाकर दुनिया को बेहतरीन उदाहरण दिया है। रामनवमी का उत्सव सही रूप में तब मनाया माना जाएगा जब हम अपने जीवन में श्री राम के ऐसे उत्कृष्ट चरित्र की कुछ विशेषताओं को धारण करते हैं।

श्री राम इतना उत्कृष्ट और आदर्श जीवन कैसे जि पाए? क्योंकि श्री राम ने अपने श्रेष्ठ चरित्र निर्माण एवं उसकी रक्षा के लिए अपने आराध्य परमात्मा शिव का सदैव प्रेमपूर्वक ध्यान किया है। श्री राम ने सीता स्वयंवर में शिव धनुष तोड़ने की क्षमता शिव कृपा से ही प्राप्त की थी| लंका विजय में कठिनाई के समय भी श्री राम ने समुद्र तट पर एक शिवलिंग की स्थापना कर ज्योतिस्वरुप के रूप में भगवान शिव की पूजा की थी और भगवान शिव ने उनके कार्य को सरल बना दिया था। उसीकी यादगार में आज भी रामेश्वरम में रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजा की जाती है।

वर्तमान समय इसका महत्व इसीलिए है कि सृष्टिचक्र का वर्तमान समय कलयुग का अंतिम समय है। दुनिया विनाश के कगार पर खड़ी है। इसे कोई इंकार नहीं कर सकता। ऐसे वर्तमान संगम युग के समय पर सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता, परमात्मा, रामेश्वर शिव, अपने स्वयं के वादे के अनुसार, सर्वश्रेष्ठ सतयुगी रामराज्य की स्थापना अर्थ अवतरण कर चूके है। और वो ब्रह्मा के तन के माध्यम से ज्ञान और राजयोग की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। यदि हम निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा शिव की इस ज्ञान योग की शिक्षा का अध्ययन, मनन और चिंतन कर के उनकी दी गई श्रीमत पर चलेंगे तो रामराज्य की स्थापना दूर नहीं है।

इस राजयोग का पहला चरण है ईश्वर द्वारा दिए गए आत्म-ज्ञान के अनुसार आत्मचिंतन, आत्मदर्शन कर आत्मानुभूति करना। जब हम आत्मिक स्मृति में स्थित हो जाते हैं, तो फिर हमारे लिए ज्योतिबिन्दु स्वरूप शिव परमात्मा के साथ संबंध स्थापित करना आसान हो जाता है। परमात्मा से संबंध जुटने से हम दिव्य गुणों एवं शक्तियों से संपन्न बनते है। योग अग्नि में हमारे विकर्मो का विनाश होता है और अनेक कर्म बंधनों से हम मुक्त हो जाते है| तो इस तरह हम अपने जीवन में राजयोग का अभ्यास करेंगे तो श्री राम के चरित्र को हमारे जीवन में साकार कर पाएंगे। साथ ही एक उत्कृष्ट राम राज्य की स्थापना कर सकेंगे।

तो आइए हम सब चैत्री नवरात्रि के दौरान और विशेष रामनवमी के दिन अंतर्मुखी बन, अपनी आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर, सभी धर्मों की आत्माओं के पिता, शिव को याद करें और अपने जीवन में श्री राम के चरित्र को साकार करे। साथ साथ एक उत्कृष्ट रामराज्य की स्थापना के परमात्मा के कार्य में सहयोगी बने। सही मायने में यही रामनवमी मनाना होगा।

---------- 0 ------ 0 ------ 0 ----------

ब्र.कु. प्रफुल्लचंद्र;

सानडिएगो, युएसए

(M) +91 98258 92710